International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 7.924 Volume 12, Issue 03, March 2025
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

हिन्दी पत्रकारिता को अज्ञेय संपादित 'दिनमान' का प्रदेय

डॉ. श्याम शंकर सिंह, प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
राजीव गांधी विश्वविद्यालय, रोनो हिल्स, दोईमुख, ईटानगर
Email: sssingharunachal@gmail.com

हिंदी पत्रकारिता की बड़ी गौरवशाली परम्परा रही है I इसकी शुरुआत पंडित युगुल किशोर के 'उदंत मार्त्तण्ड' से होती है I बहुत ही कम समय में हिंदी पत्रकारिता अपनी अविरल और अखंड परम्परा का निर्माण कर लेती है और अपनी विकास यात्रा की ओर त्वरित गति से निकल पड़ती है I पराधीन भारत में हिंदी पत्रकारिता को संघर्ष के दौर से गुजरना पड़ा I स्वाधीन भारत में इस संघर्ष में कमी आयी लेकिन अपनी ही आंतरिक असंगतियों के विरुद्ध संघर्ष की चुनौती भी आ खड़ी हुई I पत्रकारिता के इतिहास में जिन पत्रकारों के कार्यों को आदर के साथ याद किया जाता है उनमें सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का नाम उल्लेखनीय है I अज्ञेय के पत्रकारिता कर्म का वैशिष्ट्य यह है कि वह हिंदी के एक बहुत ही महत्वपूर्ण रचनाकार के द्वारा किया गया कार्य है I

हिंदी क्षेत्र में समग्र पत्रिका की आवश्यकता को 'दिनमान' ने पूरा किया I डॉक्टर सतीश कुमार राय के अनुसार- " 'दिनमान' अज्ञेय की सम्पादन -कला का निकष भी है और प्रतिमान भी I"(हिंदी -पत्रकारिता के प्रतिमान,पृष्ठ 180) अज्ञेय की पत्रकारिता दृष्टि का वैशिष्ट्य टाइम्स ग्रुप की पत्रिका 'दिनमान' (साप्ताहिक) में

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

पूरी तरह निखर कर सामने आया I वे फ़रवरी 1965 से 1969 तक इसके सम्पादक रहे I वे इसके आरंभकर्ता रहे I उन्होंने दिसम्बर 1968 में एक वर्ष का अवकाश लेकर रीजेंट्स प्रोफ़ेसर के रूप में बर्कले (कैलिफ़ोर्निया) में अध्यापन किया और सितम्बर 1969 में विदेश से लौट कर 'दिनमान' से त्यागपत्र देकर मुक्त हो गए I साहू शांतिप्रसाद जैन ने 'टाइम्स' और 'न्यूज़वीक' का आदर्श सामने रख कर 'दिनमान' में पूँजी लगाया था I अज्ञेय के सामने यह प्रस्ताव आया कि टाइम्स ऑफ़ इंडिया एक ऐसी पत्रिका का प्रकाशन करना चाहते हैं कि जिसमें 'टाइम' की तरह 'कला, संस्कृति, राजनीति साहित्य, विज्ञान, क्रीड़ा आदि सभी राष्ट्रीय गतिविधियों का उचित प्रतिनिधित्व हो' I लेकिन साहित्यकार-सम्पादक और दिनमान के आरंभकर्ता अज्ञेय का मंतव्य भी उल्लेखनीय है-" 'दिनमान' के लिए अमरीकी 'टाइम' नमूना नहीं है I हाँ, समाचार संग्रह के लिए जितना बड़ा संगठन 'दिनमान' कर सकेगा, करेगा"[1] सम्पादक ने दिनमान के संदर्भ में यह संकल्प भी व्यक्त किया और व्यवहार में इसे कर दिखाया I कहने की आवश्यकता नहीं कि अज्ञेय की मौलिकता की अवधारणा यहाँ भी सक्रिय हैंI

योगराज थानी को अज्ञेय द्वारा दिए गए साक्षात्कार के साक्ष्य से रमेशचन्द्र बताते हैं कि "नामकरण की प्रक्रिया में पहले 'देशकाल' सोचा था I" यानि पत्रिका देश और काल के आयाम के साथ विकसित हो I फिर 'दिनमान' नाम सामने आया I 'दिनमान' नामकरण भी साभिप्राय है I यहाँ भी अज्ञेय की रचनाकार दृष्टि सक्रिय है I रमेशचंद्र शाह का कहना है- वैसे कुमायूँनी बोली में 'दिनमान' शब्द 'दिन भर' के अर्थ में प्रयुक्त होता है और मुझे कुछ ऐसा याद पड़ता है कि किसी ने इस नाम का सम्बंध मनोहर श्याम जोशी की सूझ या सुझाव से भी जोड़ा था I परंतु वह यों ही I" एक पाठक की भी जिज्ञासा थी कि " 'दिनमान' नाम तो किसी दैनिक पत्र का ही

हो सकता है I साप्ताहिक के लिए यह नाम कैसे सार्थक है? इस नाम के अंतर्गत दिन-भर का लेखा-जोखा ही प्रस्तुत हो सकता है, सप्ताह भर का नहीं I" इस पर रचनाकार अज्ञेय ने जो जवाब लिखा उससे काल का मर्म स्पष्ट होता है-'दिनमान' अर्थात् सूर्य, दिन, सप्ताह, मास, वर्ष सभी की माप प्रस्तुत करता है, इसलिए वह युग-मान भी है I"

रामकमल राय के अनुसार अज्ञेय ने "पत्रिका के मालिकों के साथ लिखित शर्तनामा कराना ज़रूरी समझा कि पत्रिका में जो कुछ भी छपेगा वह शुद्ध रूप से सम्पादक का दायित्व और अधिकार होगा I कभी भी और किसी भी स्थिति में मालिकों का हस्तक्षेप नहीं होगा I साथ ही उस शर्तनामे में यह भी शर्त थी कि पूरा सम्पादक-मंडल प्रधान सम्पादक की संस्तुति पर ही नियुक्त किया जाएगा I"[2] रामकमल राय की टिप्पणी है कि हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में यह पत्र अपनी स्वायत्तता की परिकल्पना के लिए मील का पत्थर बना I शर्तनामे का उल्लेख, दिनमान में अज्ञेय के साथ काम कर चुके, मनोहरश्याम जोशी ने भी किया है I

दिनमान को मिले शुभकामना संदेश उल्लेखनीय हैं I ये संदेश दिनमान को उचित गौरव प्रदान करते हैं और इनके माध्यम से पत्रकारिता के आकाश में अज्ञेय संपादित दिनमान की प्रकाशिका शक्ति में विश्वास व्यक्त किया गया है I तत्कालीन शिक्षा मंत्री मोहम्मद करीम छागला के शुभकामना संदेश में कहा गया था: "अज्ञेय का नाम साहित्य में सुरुचि, शालीनता, नवीनता और प्रौढ़ि का वाचक समझा जाता है I मुझे पूरा विश्वास है कि उनके संपादकत्व में निकलने वाला 'दिनमान' दिनमान के ही समान प्रतापी और जाज्वल्यमान होगा I" तत्कालीन सूचना एवं प्रसार मंत्री इंदिरा गांधी के शुभकामना संदेश में कहा गया था: "वात्स्यायनजी हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित रचनाकार हैं I मुझे आशा है कि उनके निर्देशन में यह पत्रिका

भारतीय पत्रकारिता के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करेगी I" राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा था: " 'दिनमान' सही दिशा में हमारे लिए कल्याणकारी हो, यही कामना है I" रमेशचंद्र शाह की यह टिप्पणी एकदम सटीक है: ये "शुभकामनाएँ निरी औपचारिकता भर नहीं लगतीं I" दूसरे अंक की चिट्ठी-पत्री में उत्तर प्रदेश की तत्कालीन मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी का शुभकामना संदेश छपा: " 'दिनमान' हिंदी पत्रकारिता में एक स्थायी मानदंड बने और जनतांत्रिक समाज तथा राष्ट्रीय एकता के पथ को आलोकित करे I"[3] चिट्ठी-पत्री में ही हेम बरुआ ने लिखा था: " आपके साहित्य के साथ आपकी दृष्टि और दूरदर्शिता का भी क़ायल रहा हूँ I मुझे पक्का विश्वास है कि 'दिनमान' एक संगठित भारत का परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करेगा, जिसका या तो अस्तित्व ही नहीं था या फिर जिसका विकृत रूप ही देखने में आता है I" निश्चय ही ऊपर उद्धृत सभी शुभकामनाएँ अज्ञेय सम्पादित दिनमान में फलीभूत हुईंI दिनमान के अंक इसके साक्षी हैं I इस दृष्टि से दिनमान के सभी अंक दस्तावेज़ीकरण की श्रेणी में परिगणित किए जाने योग्य हैं I

अज्ञेय ने 'दिनमान' में राजनीतिक विषयों को भी शामिल करने का संकल्प व्यक्त किया I लेकिन यहाँ भी उन्होंने अपने स्वातंत्र्यचेता व्यक्तित्व का परिचय दिया I उन्होंने स्पष्ट किया कि "होगी पत्रिका राजनीतिक, इस अर्थ में कि उसमें सब राजनैतिक विषय होंगे, बातें होगी पर किसी दल की अनुगामिनी नहीं होगी I" दिनमान में रहते हुए अज्ञेय ने इस संकल्प को व्यवहार के स्तर पर भी दर्शाया I "जहां उन्हें नीतियाँ राष्ट्र-विरोधी लगीं, उन्होंने पूरी निर्भयता से उनकी आलोचना की; जहां विपक्ष दृष्टिहीन, संकीर्ण और दलीयता के दलदल में धंसा दिखा, उसे संकेतित करने में भी उन्होंने हिचक नहीं दिखलाया I"[4] अच्युतानंद मिश्र ने दिनमान में व्यंजित राजनीतिक दृष्टि का उल्लेख करते हुए लिखा है कि " 'दिनमान' के पन्ने गवाह हैं

कि प्रधानमंत्री बनने के बाद 'दिनमान' और अज्ञेय द्वारा सबसे कटु आलोचना इंदिरा गांधी और उनकी सरकार की ही की गयी थी। 'हिंदी की राह के रोड़े' सम्पादकीय टिप्पणी में उन्होंने लिखा, 'अच्छा नेता कम बोलता है, लोकतंत्र भारत के अधिकतर नेता अधिक बोलते हैं । इसलिए नेताओं की अधिकतर बातें अब अनसुनी कर देने लायक़ हो गयी हैं। लेकिन बीच-बीच में कोई बात ऐसी भी कह दी जाती है जिससे एकाएक कई ख़तरनाक संभावनाएँ उघड़कर सामने आ जाती हैं। ख़तरनाक इसलिए कि जिस मनोवृत्ति या पूर्वाग्रह का परिचय वह बात देती है वह मनोवृत्ति दूषित है। प्रधानमंत्री जब ग़ालिब और कृश्न चंदर के काम की तुलना करती हैं तब उनकी बात हंस कर उड़ा दी जाती हैं, क्योंकि वह केवल समकालीन साहित्य के बारे में एक राजनेता का अज्ञान ही सूचित करती हैं और ऐसे लोगों के इस अज्ञान के हम अभ्यस्त हो गए हैं।' ऐसी अनेक तीखी टिप्पणियाँ 'दिनमान' में मौजूद हैं।" ऐसी निर्भयता दुर्लभ है I लोभ-लालच या भय के कारण सत्य दबता है I रामकमल राय ने अपने एक संस्मरण का उल्लेख किया है- "दिनमान के तीसरे या चौथे अंक में डॉक्टर राममनोहर लोहिया का मुखपृष्ठ पर बड़ा-सा चित्र छपा तथा अंदर 'विरोध का दर्शन' शीर्षक से उन पर एक सशक्त लेख भी छपा था I...लोगों को लगा कि दिनमान कुछ अधिक ही स्वायत्त होता जा रहा है I एक बार इंदिरा जी ने अनौपचारिक रूप से 'दिनमान' के मालिक...से हँसते हुए कहा भी था कि दिनमान के सम्पादक से लोहिया का कोई पैक्ट हो गया है क्या?...अज्ञेय से इस चर्चा का उल्लेख भर किया था I अज्ञेय मुस्कराकर चुप रहे I" रामकमल राय की इस प्रसंग पर टिप्पणी है- "यह थी स्वतंत्र पत्रकारिता की नियति अज्ञेय के हाथों में I" पेड न्यूज़, गोदी मीडिया और येलो जर्नलिज़्म जैसी बातों के लिए अज्ञेय की पत्रकारिता में कोई जगह न थी! 'सैनिक' से लेकर 'नया प्रतीक' के बंद होने तक ऐसा ही रहा I अज्ञेय की पत्रकारिता दृष्टि का यह पक्ष विशेष रूप से उल्लेखनीय है I लोहिया पर लिखे जाने का मतलब

यह नहीं था कि दिनमान लोहियावादी हो गया I दिनमान को पत्र लिखते हुए जब लोहिया ने कहा कि दिनमान अमेरिकी टाइम के नमूने पर प्रस्तावित है तब अज्ञेय ने तुरंत इसका खंडन किया I लोहिया ने अपनी चिट्ठी में 'पुराने हिंदुस्तान की नासमझ पूजा करने वाले पीछे देखू' और 'अमरीकी या रूसी या पश्चिम योरोपीय नक़ल पर चलने वाले' लोगों पर व्यंग्य किया था और 'नक़ली एशियाई रुख़ अपनाने' वालों के प्रति वितृष्णा व्यक्त की थी I अज्ञेय ने लोहिया के इस प्रकार के विचारों के प्रति भी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा कि "विदेशी मामलों पर लिखनेवालों हिंदुस्तानियों की 'रुख़' के अलावा एक कमी यह भी रहती है कि उनके सोचने पर अंग्रेज़ी की छाप बहुत गहरी रहती है, वे भारतीय भाषाओं में नहीं सोचते, अनुवाद में सोचते हैं-चाहे वे अंग्रेज़ी विरोधी ही क्यों न हों I 'दिनमान' ऐसी भाषा में ऐसे चिंतन का प्रयत्न करेगा कि उसमें न तो 'हिंदुस्तान की नासमझ पूजा' दिखेगी और न हिंदुस्तान की किसी भी भाषा का कम-समझ मलिदा I" अज्ञेय विदेशी मामलों पर लिखने वालों के रुख़ की परख आवश्यक समझते हैं और इस बात की परख भी कि कहीं चिंतन पर अंग्रेज़ी का प्रभाव मौलिकता पर हावी तो नहीं हो रही है? इसी तरह अपनी भाषा में चिंतन होना चाहिए न कि अनुवाद में ! अनुवाद मौलिकता का बहुत दूर तक साथ नहीं दे सकता I अनुवाद आधृत चिंतन अनुवाद की भाषा को भी सामने लाएगा जिससे सम्प्रेषण पर दुष्प्रभाव पड़ता है, पठनीयता ख़तरे में पड़ जाती है I दिनमान ने उस चिंतन प्रणाली को भी हतोत्साहित किया जिसमें हिंदुस्तान के प्रति श्रद्धा और प्रेम व्यक्त करते समय कम समझी दिखायी पड़ती थी या हिंदुस्तान की किसी भी भाषा का कम समझ मलीदा (बारीक कुचला हुआ खाद्य पदार्थ) दिखाई पड़ता था I ढली हुई भाषा में चिंतन की मौलिकता और परिपक्वता का अहसास कराने वाली सामग्री ही स्वागत योग्य मानी गयी I अज्ञेय ने दिनमान में लोहिया की राजनीति और कार्य पद्धति पर भी प्रश्न उठाया- "अपने गम्भीर अध्ययन और मौलिक चिंतन

के बावजूद लोहिया बराबर अपने को ऐसी स्थिति में डालते (या रखते), जहां उनकी नीतियों की बुनियाद एक सर्वथा नकारात्मक 'हटाओ'- वाद के सिद्धांत पर क़ायम रही है I" अज्ञेय ने इसे 'नास्तुवाद' कहा है I अज्ञेय ने लोहिया द्वारा प्रणीत 'नकारात्मक राजनीति' की आलोचना की है I लोहिया द्वारा अपनायी गयी भाषा शैली की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि इसमें सत्य के ओट में हो जाने की आशंका मंडराती रहती है I दिनमान में अज्ञेय ने दूसरे पक्ष को समुचित जगह दी I 'चिट्ठी-पत्री' स्तम्भ में उन्होंने अपने सम्पादक धर्म का निर्वाह करते हुए सुरेंद्र चौधरी इत्यादि चार वामपंथियों के हस्ताक्षर से युक्त क्रोध भरा पत्र भी प्रकाशित किया और पत्र का संयमपूर्वक उत्तर भी दिया I पत्र में दिनमान द्वारा अपनायी गयी नीति को 'पैग़म्बरी नीति' कहा गया था I सम्पादक के रूप में अज्ञेय ने तत्काल स्पष्ट किया कि "राजनीतिक स्थितियों के विवेचन में 'दिनमान' मतैक्य नहीं चाहता I" इसी तरह अज्ञेय ने कन्याकुमारी से आए एक पत्र को भी दिनमान में जगह दी I इस पत्र की विषयवस्तु में तत्कालीन भाषा विवाद के संदर्भ में विचार व्यक्त किए गए थे: "क्यों न तमिल को राजभाषा घोषित कर दें? जब तमिल राजभाषा हो जाएगी तब वह तमिल वालों की भाषा तो रहेगी नहीं I" आज भी राजभाषा हिंदी को हिंदी प्रांतों की भाषा के रूप में देखा जाता है! हिंदी की राजभाषा के रूप में स्वीकृति हिंदी के आत्मविस्तार की सूचक है I लेकिन इसका एक पहलू यह भी है कि आत्म विस्तार में स्वत्व सीमित हो जाता है I उसके भागीदार इसे सीमित कर देते हैं I विरोधी विचारों को जगह देना और उनसे संवाद स्थापित करना लोकतांत्रिक दृष्टि का सूचक है I वस्तुतः सम्पादक के लिए देश हित और जन हित सर्वोपरि है I अज्ञेय 'उचित वक्ता' की परम्परा का निर्वाह करने की भूमिका में रहे I कच्छ के समझौते को लेकर लिखी गयी सम्पादकीय टिप्पणी, पश्चिमी इंडीज़ के भारतीय दौरे के लिए विदेशी मुद्रा भारत सरकार द्वारा उपलब्ध न कराए जाने पर सम्पादकीय के द्वारा क्षोभ व्यक्त करना-ये प्रसंग यही

सिद्ध करते हैं I क्रिकेट दौरे के लिए सरकार द्वारा धन खर्च न किए जाने और अन्य ग़ैर महत्व के कार्यों में खर्च किए जाने पर सम्पादक की टिप्पणी है-"जनहित के आयोजन के सामने निरा जन आज भी निरीह!" जन के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है यह!

रघुवीर सहाय ने अज्ञेय के कार्य को "सम्पादकीय वग़ैरह" तक ही सीमित रखा है I उन्होंने लिखा है कि "मैदान से उनका कोई ताल्लुक़ नहीं था I" और यह भी कि "हमारे पास दूसरे क्षेत्र में उनका किया हुआ सामने भी नहीं है I"[5] लेकिन उनके कुछ कार्यों का उल्लेख कुछ विद्वानों ने किया है I विद्यानिवास मिश्र ने 'फ़ील्ड' से सम्बंधित एक कार्य का उल्लेख करते हुए लिखा है- "1967 के उत्तरार्ध में उन्होंने सूखाग्रस्त बिहार की यात्रा की I पत्रकार की हैसियत से नहीं बल्कि एक संवेदनशील मनुष्य की हैसियत से I इस यात्रा का उद्देश्य गहरे मानवीय संकट की साझेदारी का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करना था I साथ ही साथ इस प्रकार की परिस्थिति की दुरंतता की ओर सफ़ेदपोश तटस्थ लोगों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए उन्होंने मर्मस्पर्शी चित्र खींचे और उन चित्रों की प्रदर्शनी दिल्ली में लगायी I दिनमान के माध्यम से उन्होंने यह प्रयत्न किया कि देश का पढ़ा-लिखा आदमी ऐसे गहरे संकट को अपना संकट समझ सके और ऐसे संकट के प्रति शिक्षा देने वाले का भाव न रखकर संकट के लिए लज्जा और दुःख का भाव रखे, इसकी जमीन तैयार की I"[6] अज्ञेय ने भी स्मृति-लेखा में लिखा है कि "मेरी योजना बिहार के सूखाग्रस्त प्रदेशों की यात्रा कर के दिनमान के लिए एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार करने और देश का ध्यान उस की ओर आकृष्ट करने की थी I"[7] पत्रकारिता और साहित्य प्रयोजन का मणिकाँचन संयोग यहाँ देखा जा सकता है I अज्ञेय एक कुशल फ़ोटोग्राफ़र भी रहे I उन्होंने अपने इस गुण का बड़ा ही सार्थक उपयोग और प्रयोग चित्रों के प्रसंग में

किया I ज्ञान और संवेदना का अद्भुत सम्मिश्रण यहाँ देखा जा सकता है I उनके कैमरे की आँख साहित्यिक संवेदना से आप्लावित है I पंकज शुक्ला ने उनके एक अन्य कार्य का उल्लेख करते हुए लिखा है-"जब गोवा के आज़ाद होने पर ऑल इंडिया कॉङ्ग्रेस कमेटी ने महा सम्मेलन किया तो इसके कवरेज के लिए वे खुद गए I जबकि सम्पादक के नाते वे किसी भी रिपोर्टर को भेज सकते थे."[8] अज्ञेय स्थान और स्थान पर हुए कार्यक्रम तथा इतिहास बोध के महत्व को भली-भाँति समझते थे और इसी के आधार पर उन्होंने यह निर्णय लिया होगा I ऐसा अनुमान किया जा सकता है I ऊपर सैनिक के सम्पादन में अज्ञेय और प्रभाकर माचवे द्वारा मिलकर मेरठ के किसान सम्मेलन और हिंदी साहित्य परिषद के समारोहों के व्यंग्यमय विवरण लिखे जाने के प्रसंग का उल्लेख किया जा चुका है I अज्ञेय मेरठ के किसान सम्मेलन और हिंदी साहित्य परिषद में सहभागी के रूप में शामिल हुए थे I इसलिए यह भी फ़ील्ड से सम्बंधित माना जाएगा I रामविलास शर्मा ने बागपत में हुए किसान सम्मेलन का उल्लेख करते हुए प्रभाकर माचवे के इन कथनों को उद्धृत किया है- "लगातार कई दिन और कई रात गाँवों में घूम-घूम कर किसान -मार्च का संगठन करने में उन्होंने अपने को लगा दिया था I" दिल्ली में जब वे प्रभाकर माचवे से मिले "तो उनका गला लगातार व्याख्यान देने की वजह से भारी हो गया था I"[9] मेरठ साहित्य-परिषद के सम्मेलन के बारे में रामकमल राय की टिप्पणी है- "वात्स्यायन के अपने जीवन में इतने बड़े साहित्यिक आयोजन का पहला अनुभव था I" लेकिन फ़ील्ड से सम्बंधित इन कार्यों को अपवाद माना जाएगा I रघुवीर सहाय का उपरोक्त कथन अज्ञेय की पत्रकारिता के एक मुख्य पहलू को उद्घाटित करता है I लेकिन अज्ञेय की पत्रकारिता का मूल्यांकन एकमात्र इसी कसौटी पर करेंगे तो अभाव पक्ष पर ही ध्यान केंद्रित होने लगेगा और भाव पक्ष के अवमूल्यन की आशंका आ खड़ी होगी I

रघुवीर सहाय ने, 'जो कि अज्ञेय के दिनमान से अलग होने पर उनकी ही संस्तुति के साथ पत्र के मुख्य सम्पादक भी बने', दिनमान में अज्ञेय के अवदान को याद करते हुए कहा है कि "दिनमान के शुरू के दिनों में वात्स्यायन जी ने जो नक्शा बनाया और जो ईंटे वहाँ लगायी, उनकी मदद से एक ऐसी चीज़ वहाँ बन गयी, जो अगर न होती तो आगे हम-आप कुछ भी नहीं कर सकते थे I हमको बड़ी दिक़्क़तें आतीं I मसलन उन्होंने पहली बात तो यही की कि इसमें 'टाइम' और 'लाइफ़' के पैटर्न पर जो होगा, उसमें जीवन के सब पहलू होंगे I मतलब इसमें विज्ञान, धर्म, राजनीति आदि सब चीजें जाएँगी I...वात्स्यायन जी 'टाइम' और 'लाइफ़' के विचार को विस्तृत करना चाहते थे...वात्स्यायन जी की बनायी हुई जो ज़मीन थी, वह इतिहास का सत्य है I...किया, एक सही काम I ...उसमें बहुत से प्रमाण ऐसे मिले जिनसे तुरंत समाज के एक हिस्से में इसकी स्वीकृति हुई क्योंकि लोगों को लगा कि कभी हमने हिंदी में ऐसी पत्रिका पढ़ी ही नहींI हालाँकि यह कहना बिल्कुल ग़लत होगा कि उन तीन सालों में जो प्रतिमान बना दिए वात्स्यायन जी ने, वे हिंदी पत्रकारिता के बिल्कुल नए प्रतिमान थे I वास्तव में सब मिलाजुला था और उसमें कोई दिशा नहीं थी I दिशा तो तब दिखनी शुरू हुई, जब कांग्रेस के जड़ केंद्रीकरण के विरुद्ध 'दिनमान' ने नीति बनायी I"[10] रघुवीर सहाय ने उनके साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य करने के क्रम में जो अनुभव प्राप्त किए, उसके आधार पर अज्ञेय के पत्रकार रूप का मूल्यांकन इस प्रकार करते हैं- "वह सिखाने और सिखाकर स्वतंत्र करने वाले अपूर्व गुरु, सहयोगी, सखा और मित्र थे I"[11] यह अज्ञेय के पत्रकार रूप की विशेषता है I रघुवीर सहाय ने अपने पत्रकार-साहित्यकार रूप के निर्माण में अज्ञेय के महत्व को स्वीकार किया है I उपरोक्त पंक्तियों से भी यह स्पष्ट है I दिनमान के प्रसंग में विद्यानिवास मिश्र के द्वारा किया गया मूल्यांकन अज्ञेय की पत्रकारिता दृष्टि के अभिज्ञान में बहुत कुछ जोड़ता है I उन्होंने लिखा है कि "...वे हिंदी पत्रकारिता

के स्तर को ऊँचा उठाने में अपना योगदान करना चाहते थे I साथ ही वे अपने लिए प्रयोग भी करना चाहते थे कि सहृदय ही नहीं, जन साधारण मात्र के स्तर पर मैं प्रेषणीय बनूँ I इसके अलावा एक ज़बर्दस्त कारण था I अज्ञेय स्वातंत्र्योत्तर भारतवर्ष में अपनी राष्ट्रीय प्रतिबद्धता का निर्वाह करने के लिए यह ज़रूरी समझने लगे कि ग़ैर पेशेवर राजनैतिक मत का सामने आना आवश्यक हो गया है I पेशेवर राजनीतिज्ञों के हाथ में देश को सौंपकर चुपचाप बैठ जाना जनतंत्र के लिए वांछनीय नहीं है I"[12] यह अज्ञेय की पत्रकारिता दृष्टि का वह वैशिष्ट्य है जो उनकी साहित्य दृष्टि को और प्रतिबद्धता को भी सामने लाता है I अज्ञेय की राजनीतिक चेतना ही पराधीन भारत में क्रांतिकारी जीवन के रूप में परिणत हुई थी I दिनमान का अध्ययन किए बिना अज्ञेय की साहित्य दृष्टि का अनुशीलन अधूरा है I विद्यानिवास मिश्र लिखते हैं कि "दिनमान में उन्हें सबसे पहला अनुभव यह हुआ कि हिंदी की प्रतिष्ठा की बुनियाद हिंदी की प्रेषणीयता में है, हिंदी की आंतरिक शक्ति में है I हिंदी के पाठक की सुरुचि, प्रबुद्धता और जिज्ञासा में ही हिंदी की वास्तविक शक्ति है I इस विश्वास ने उन्हें अपनी समूची संगठन-शक्ति, कल्पना और मनोयोग को लगाकर दिनमान के विकास के लिए प्रेरणा दी I छः महीने के भीतर ही हिंदी का ही नहीं, भारत का अनन्यतम साप्ताहिक समाचारपत्र बन गया, यहाँ तक कि विदेश के पत्रकारों ने कहा कि "जिस भाषा में दिनमान जैसा साप्ताहिक पत्र निकले उसे क्षमाप्रार्थी होने की आवश्यकता नहीं I" दिनमान न केवल फैलते हुए विश्व की जानकारी सुलभ कर रहा है और सुरुचि का परिमार्जन कर रहा है, बल्कि भारत की राष्ट्रीय विचारधारा को एक अपने में पूर्ण मूर्त आकार प्रदान कर रहा है I दिनमान में ही एक तीखा अनुभव भी हुआ: अंग्रेज़ी के लिए मानसिक दासता का ऐसा कुप्रभाव है कि हिंदुस्तान के समाचार पत्र प्रतिष्ठान हिंदी पत्र और पत्रकार को अंग्रेज़ी से नीचे का दर्जा देते हैं और हिंदुस्तान के तथाकथित प्रबुद्ध पाठकों का एक महत्वपूर्ण वर्ग अंग्रेज़ी से लिखी

हुई बातों को ही प्रमाण मानता है I बेनेट कोलमेन इस व्यवस्था का अपवाद तो था नहीं! दिनमान के विकास की आवश्यकताओं को लेकर अज्ञेय को काफ़ी जूझना पड़ा I"[13] यह अज्ञेय की पत्रकारिता के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है I दिनमान के स्तम्भों ने अपनी गरिमा, विश्लेषण एवं पैनी दृष्टि के कारण 'लोगों के दिल में गहरी जगह' बना ली थी I विद्यानिवास मिश्र ने ऐसी कई बातों का उल्लेख किया है जिन्हें जानने के लिए और कोई स्रोत उपलब्ध नहीं है I हिंदी की प्रेषणीयता के अभिज्ञान ने अज्ञेय की काव्य-भाषा को प्रभावित किया I पत्रकारिता क्षेत्र में प्रवेश करने के कारण अज्ञेय हिंदी की प्रतिष्ठा के निर्माण घटकों पर चिंतन करने के लिए प्रेरित हुए और इस बात का अहसास हो सका कि अब भी अंग्रेज़ी से लिखी हुई बातों को ही प्रमाण माना जाता है I भारतीयों के एक वर्ग में अंग्रेज़ी के प्रति श्रेष्ठता बोध की भावना है और हिंदी के प्रति हीनता बोध की! अज्ञेय को इन चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा I लेकिन यह भी उल्लेखनीय है कि विद्यानिवास मिश्र के शब्दों में, "दिनमान अज्ञेय का साध्य नहीं है ,एक साधन मात्र है I"[14] अज्ञेय पहले साहित्यकार थे- पत्रकार बाद में! वस्तुतः वे 'अपने कर्तव्य-बोध से आबद्ध' थे I साहित्यकार अज्ञेय को यह लाभ भी हुआ कि 'देश की सम्पृक्तता से स्वर में बड़ी तेजस्विता' आयीI अज्ञेय ने दिनमान को एक सम्पूर्ण पत्रिका के रूप में विकसित किया I हिंदी के पाठकों को विश्व परिदृश्य से परिचित कराया और अनेक स्थायी स्तम्भों के माध्यम से एक विशाल पाठक वर्ग तैयार किया I दिनमान ने टाइम्स ग्रुप को काफ़ी प्रतिष्ठा दी और इसके द्वारा हिंदी में सम्पूर्ण पत्रिका के अभाव की पूर्ति हो गयी I यह पत्रिका अज्ञेय की साहित्यिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पत्रकारिता दृष्टि को एक साथ रेखांकित करती है I आलोक पांडेय ने दिनमान की विषयवस्तु और महत्व का उल्लेख इस प्रकार किया है -"क्या नहीं था जो अज्ञेय ने दिनमान में नहीं किया I पाठकों को प्रश्न चर्चाओं के माध्यम से अपने और परिवेश के साथ जोड़ने की मुहिम हो या जीवन

और जगत के किसी भी मूल्यवान पक्ष को समेट कर पाठकों तक पहुँचाने की बेचैनी, दिनमान ने पत्रकारिता की दुनिया में जो प्रतिमान स्थापित किए वह आज भी बहुतों की स्मृति में ताज़ा है I संग्रहालयों की आवश्यकता और स्थिति पर लेख हो या सड़क पर चल रही कला प्रदर्शनी की रपट, खेती, किसानों की समस्याएँ हो या अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव का आँखों देखा हाल, गांधी मूर्तियों की दुर्दशा का वर्णन हो या स्कूलों में होने वाली प्रार्थनाओं की समीक्षा, दिनमान ने एक ऐसी पत्रकारिता को जन्म दिया जिसे पढ़ने के लिए लोग प्रतीक्षा करते थे I मीलों साइकिल चलाकर ख़रीदने जाते थे I उसमें किसी का पत्र भी छप जाता था तो वह अपने समुदाय में साहित्यकार माना जाने लगता था I रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, मनोहर श्याम जोशी और प्रयाग शुक्ल जैसे अनेक महत्वपूर्ण लोग हैं जो अपने होने और बनने में दिनमान के ऋण स्वीकारी हैं पर ऐसे भी लोगों की संख्या सैकड़ों में है जिनके नाम हम नहीं जानते पर वे अपने साहित्यिक और पत्रकारीय गुणों का श्रेय दिनमान को देते हैं I विज्ञान से लेकर सिनेमा और राजनीति से लेकर साहित्य तक विस्तृत दिनमान की दुनिया में विषयगत विविधता लोकप्रियता या पठनीयता के नाते किसी क़िस्म का हल्कापन पैदा करती हो, ऐसा क़तई नहीं था I उसमें गम्भीर वैचारिकता तो थी पर पांडित्य प्रदर्शन नहीं था, चमत्कृत कर देने वाली सर्जनात्मक भाषा तो थी पर भाषा का मदारीपन नहीं था I पूरी दुनिया से पूरेपन में सरोकारों के साथ समाचार हो या लेख सभी मानवीय प्रगति और भारतीय आत्मा की परिधि में रहती थी I यह दिनमान अज्ञेय ने बनाया था I एक ऐसी पत्रिका जिसको बनाने में लगे हाथ भी उसे उतनी ही शिद्दत से आज भी याद करते हैं जितना उसे पढ़ने वाली आँखें, इस मतलबपरस्त दुनिया में किसी पत्रिका के प्रति यह भाव यूँ ही तो नहीं उपजा होगा I"[15] रामकमल राय का कथन है कि अज्ञेय ने दिनमान में "समय-समय पर अनेक महत्वपूर्ण प्रश्नों को उठाया और देश की आलोचनात्मक समझदारी और

विवेक को पैना बनाने में विशिष्ट योगदान किया I राष्ट्र के हर महत्वपूर्ण प्रश्न पर दिनमान का दृष्टिकोण जनमानस को प्रभावित करने लगा था I"[16] कह सकते हैं कि अज्ञेय के पत्रकार रूप का यह श्रेष्ठतर काल था I स्वयं अज्ञेय फिर ऐसा नहीं कर सके I दिनमान की पत्रकारिता बहुआयामी थी I समकालीन संदर्भों में पत्रकारिता के इस रूप के विकास की सम्भावनाओं का संधान निरंतर होते रहना चाहिए I

दिनमान में 'चिट्ठी-पत्री' स्तम्भ को अलग से जगह दी गयी I इससे पाठकों की प्रतिक्रिया को जानने में सुविधा मिली और पत्रिका को लोकतांत्रिक स्वरूप भी प्राप्त हुआ I आवश्यक होने पर अज्ञेय पत्र का उत्तर भी देते थे I चिट्ठी-पत्री स्तम्भ पत्रिका के अनिवार्य अंग के रूप में सामने आया I यह विचार विमर्श के माध्यम के रूप में भी उभरा I इनमें अज्ञेय की विचार प्रणाली स्फुटित हुई है I लोहिया की चिट्ठी, वामपंथी साहित्यकारों द्वारा हस्ताक्षर युक्त पत्र के उत्तर ऐसे ही प्रसंग हैं I दिनमान नामकरण के सम्बंध में एक पाठक द्वारा की गयी जिज्ञासा और सम्पादक द्वारा किया गया समाधान भी इसका उदाहरण है I

दिनमान के स्तम्भ विषयों की विविधता और व्यापकता के सूचक है- "पत्रकार-संसद, राष्ट्रीय समाचार, राज्यों के समाचार, राजनैतिक दल, विश्व के समाचार, उद्योग और व्यापार, खाद्य और कृषि I" बाद में स्तम्भों की संख्या में वृद्धि होती गयी- विज्ञान, आधुनिक जीवन, रंगमंच, कला, धर्म-दर्शन, साहित्य, खेल और खिलाड़ी, संस्कृति, नारी जगत, साहित्य, पुरातत्व I

'साहित्य' स्तम्भ में अज्ञेय ने 'मोर्चे पर एक और भाषा' शीर्षक के अंतर्गत मैथिली को अलग भाषा का दर्जा दिए जाने की सिफ़ारिश के औचित्य पर प्रश्न उठाते हुए लिखा है कि "इस निर्णय का प्रभाव हिंदी भाषा और साहित्य पर तो गहरा पड़ेगा

ही,आज के दूषित वातावरण में भाषा-वैमनस्य को और बढ़ावा देगा I मैथिली को स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता देना हिंदी के सार्वदेशिक चरित्र और सम्भावनाओं के हित में तो नहीं ही है -ऐसा तुष्टिकरण क्षेत्रीय अलगाववादी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करना और राष्ट्रीय सोच को संकुचित करना भी है I" मैथिली को अलग भाषा का दर्जा दिए जाने को लेकर विचार करने के लिए जो समिति बनाई गयी थी उसमें आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी भी शामिल थे I हज़ारीप्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली के दसवें खंड में संकलित द्वितीय अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के द्वितीय अधिवेशन (पटना,15 मई,1975) में पठित अध्यक्षीय भाषण से पता चलता है कि भोजपुरी को 'आपन' अर्थात् अपनी 'मातृभाषा' मानने वाले द्विवेदी जी 'भोजपुरी, अवधी वग़ैरह' शक्तिशाली बोलियों में भी साहित्य अकादमी पुरस्कार दिए जाने के लिए हामी भरते हैं I उन्होंने वक्तव्य के अंत में भोजपुरी में लिखने वाले साहित्यकारों और हिंदी में लिखने वाले साहित्यकारों का पृथक् -पृथक् नमन किया है और दोनों के कल्याण की कामना भगवान से की है -"एह क्षेत्र के भोजपुरी लिखे वाला साहित्यकार भी नमस्य बाड़े आ हिंदी में लिखे वाला भी प्रणम्य बाड़े I भगवान सबकर कल्याण करसु I" (पृष्ठ 452) वे हिंदी प्रेम और भोजपुरी प्रेम को दो हिस्सों में बाँट कर देखते है और दोनों में अविरोध की स्थिति देखते हैं जो कि सर्वथा उचित है I इस प्रेम के दोनों हिस्से -घर की बोली से प्रेम और देश की बोली से प्रेम -मिलकर पूरेपन की प्रतीति कराते हैं I 'हिस्सा' शब्द का प्रयोग दोनों की पृथकता की भी प्रतीति कराता है -"घर के बोली के प्रेम आ देश के बोली के प्रेम -प्रेम के दूनों हिस्सा मिलाके -सोगहग -सयुगभाग!" " 'सयुगभाग'-दूनों हिस्सा समेत -पूरा I" (पृष्ठ 448) इसी भाषण में उन्होंने लिखा है -"कबीरदासजी साइत भोजपुरी के आदिकवि हवीं I" अर्थात् कबीरदासजी शायद भोजपुरी के आदिकवि हैं I यदि इसे स्वीकार कर लिया

जाए तो कबीरदास को हिंदी के पाठ्यक्रमों शामिल किए जाने के औचित्य पर प्रश्नचिह्न लग जाएगा I

शिवदान सिंह चौहान ने 1954 में 'हिंदी साहित्य के अस्सी वर्ष' पुस्तक लिख कर सम्भवतः इसी झोंझ को देखते हुए 1873 से हिंदी साहित्य का आरम्भ मानने का प्रस्ताव रखा था I सम्भवतः भारतेंदु की यह पंक्ति उनके ध्यान में रही होगी - "हिंदी नयी चाल में ढली I" हिंदी की बोलियाँ कही जाने वाली भाषाएँ झोंझ में हैं I आज वे निकलने के लिए पृथक् रास्ता माँग रही हैं I इसीलिए आज मोर्चे पर एक नहीं अनेक भाषाएँ हैं I राजस्थानी भाषा में लिखित रचनाओं के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार दिए जाते हैं I अज्ञेय इस बात को सिद्धांततः स्वीकार करते हैं कि "हिंदी मैंने सीखी और यत्नपूर्वक सीखी I" कुछ आलोचकों ने इस वक्तव्य को इस अर्थ में लिया कि हिंदी अज्ञेय की भाषा नहीं थी I अज्ञेय ने इस मत पर विचार व्यक्त करते हुए लिखा है -"उस अर्थ में तो हिंदी उन की भी भाषा नहीं थी और शायद यह कहना भी अन्याय न हो कि हिंदी उनकी भाषा अब भी नहीं है, क्योंकि उनकी घरेलू बोलचाल की भाषा तो दूसरी है I" अज्ञेय के लिए "हिंदी ही वह पहली भाषा थी" जो उन्होंने सीखी और जिस का व्यवहार जीवन के हर क्षेत्र में किया - साधु हिंदी का ! (सदानीरा भाग-2, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, दूसरा संशोधित संस्करण :2003 , पृष्ठ 10)

साहित्य अकादेमी का एक लक्ष्य है -"भारत की सीमाओं के बाहर भारतीय साहित्य को प्रोत्साहित करना" I 1960 में आर. के नारायण को उपन्यास में साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला था I अर्थात् साहित्य अकादेमी अंग्रेज़ी साहित्य को भारतीय साहित्य के अंतर्गत मानती है I विद्यानिवास मिश्र द्वारा ऊल्लिखित अज्ञेय के निम्नलिखित विचार आज पुनर्मूल्यांकन की माँग करते है - "अज्ञेय की स्थापना है

कि अंग्रेज़ी न भारतीय भाषा है और न हो सकती है I वह अधिक से अधिक भारत के अभारतीय जन की भाषा है I भारत का तादात्म्य अंग्रेज़ी से नहीं I भारतीय भाषाओं में भी जो साहित्य पाश्चात्य साहित्य में अपना प्रामाण्य ढूँढता है, वह सहज नहीं है और इसी लिए वह बराबर आतंकित है कि कहीं अर्थ खो न जाए I वस्तुतः साहित्य में विशुद्ध रूप से स्वतः प्रामाण्य भारतीय साहित्य की कसौटी है ; लारेंस और काफ़्का से अधिक कालिदास और तुलसीदास में इस साहित्य का प्रामाण्य है I साहित्य परिस्थितियों से नहीं, अपने पूर्ववर्ती साहित्य से उद्भूत होता है I परिस्थितियाँ केवल हवा और पानी की तरह बीज को अंकुरित होने में सहायता पहुँचाती है I"(सं विद्यानिवास मिश्र :अज्ञेय, पृष्ठ 24) भारतीय बीज यदि अमरीका भूमि में गिराएँगे तो वह वहाँ की परिस्थितियों में भारतीय मूल के अमरीकन रूप में सामने आएगा I इसलिए परिस्थितियों की भूमिका को अनिवार्य रूप से स्वीकार करना होगा I वस्तुतः अंग्रेज़ी भारतीय भाषाओं में से एक भाषा है I यह साहित्य अकादेमी मान चुकी है I जब हिंदी को एकमात्र राजभाषा के रूप में घोषित किया जाना था तब तमिलनाडु के अधिसंख्यक लोगों ने अंग्रेज़ी के समर्थन में और हिंदी के विरोध में अपना मत दृढ़तापूर्वक और उग्र तरीक़े से व्यक्त किया I आज भारत में ऐसे लोगों की संख्या अच्छी-ख़ासी है जिनका तादात्म्य अंग्रेज़ी से है I स्वयं अज्ञेय ने अपने काव्य सिद्धांत प्रतिपादन के क्रम में टी. एस. एलियट को प्रमाण माना है I रचनाकार अज्ञेय की मनोभूमि के निर्माण में सनातन धर्म से इतर तत्वों का योग कम नहीं है I अज्ञेय शेखर :एक जीवनी उपन्यास, नदी के द्वीप एवं यह द्वीप अकेला जैसी कविताओं और नदी के द्वीप उपन्यास लेखन के दौर में व्यक्ति प्राधान्यवादी विचारधारा के प्रबल प्रतिपादक रहे हैं I दिनमान जैसी पत्रिका में अज्ञेय की भारत के बाहर की यात्राओं की भूमिका कितनी है इसकी ओर कृष्णदत्त पालीवाल जैसे विद्वानों ने ध्यान दिलाया है I अज्ञेय ने ईसाइयत का सबसे बड़ा प्रदेय यह माना है कि दूसरे

के पाप का फल अपने ऊपर ओढ़ना ही परम पुरुषार्थ है I स्पष्ट है, यहाँ सनातन धर्म में अन्वेषित कर्म फल का सिद्धांत उनकी दृष्टि से ओझल है I स्वाधीनता पूर्व के भारतीय मानस के उपनिवेशीकरण में परिस्थितियों की कितनी भूमिका है -यह बात किसी से छिपी नहीं है!

आज के भूमंडलीकृत गाँव में भारतीय अंग्रेज़ी लेखक अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार प्राप्त कर अत्यंत प्रतिष्ठित लेखकों की पंक्ति में समादृत हैं I अरुंधती रॉय, किरण देसाई, अरविंद अडिगा के नाम उल्लेखनीय हैं I

संघ की राजभाषा हिंदी के समक्ष अंग्रेज़ी कितनी मज़बूती के साथ खड़ी है यह किसी से छिपी नहीं है I राजभाषा अधिनियम 1963 यथा संशोधित 1967 (10 मई 1963) की धारा 3.5 के अंतर्गत स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि "धारा 3 के उपनियम 1/2/3 तथा 4 में निर्दिष्ट व्यवस्थाएँ तब तक बनी रहेंगी जब तक हिंदी को राजभाषा न मानने वाले राज्य अंग्रेज़ी के प्रयोग के स्थगन हेतु अपनी विधानसभाओं में प्रस्ताव पारित नहीं कर लेते और ऐसे राज्यों में अंग्रेज़ी के प्रयोग को समाप्त किए जाने का निर्णय संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित नहीं कर लिया जाता I"

भोजपुरी को अष्टम अनुसूची में शामिल कराने के लिए प्रयत्न जारी हैं I राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, हरियाणवी, अंगिका, मगही आदि को भी आठवीं अनुसूची में शामिल किए जाने की माँग उठी है I छत्तीसगढ़ी छत्तीसगढ़ की राजभाषा है I भाषावार प्रांत-विभाजन की गूंज अभी भी बनी हुई है I मिथिलांचल की माँग यदा-कदा सुनाई पड़ती है I ब्रज प्रदेश, अवध प्रदेश, बुंदेलखंड, भोजपुर के स्वर भी यदा-कदा सुनाई पड़ते हैं I हिंदी भाषा और मैथिली भाषा यदि अलग -अलग भाषाएँ हैं तो

हिंदी में विद्यापति को शामिल किए जाने और पढ़ाए जाने का औचित्य क्या है - इस तरह के प्रश्न भी उठाए गए हैं I संगोष्ठियों में भाषायी सौमनस्य का अभाव भी यदा-कदा दिखाई पड़ता प्रतीत होता है I हिंदी के सार्वदेशिक चरित्र और सम्भावनाओं पर भी प्रश्न उठाए जाते हैं I तमिलनाडु में अधिकांश जगहों पर इसका अनुभव किया जा सकता है I भारतीय विश्वविद्यालयों के अधिकांश अंग्रेज़ी विभागों में हिंदी के लिए भी 'प्रादेशिक भाषा' शब्द का व्यवहार होता है I हिंदी को संवैधानिक रूप से 'राष्ट्रभाषा' का दर्जा अप्राप्त है I अंग्रेज़ी कई राज्यों की राजभाषा बन चुकी है I नगालैंड इसका उदाहरण है I अनेक जनजातियों ने रोमन लिपि को स्वीकार कर लिया है I इनमें से कई का तर्क है कि रोमन लिपि का प्रयोग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होता है I रोमन लिपि में लिखी जाने वाली कई भाषाएँ भारतीय संविधान की अष्टम अनुसूची में शामिल होने के लिए प्रयत्नरत हैं I आज अपने को हिंदी से जोड़ने वाले न जाने कितने व्यक्ति व्हाट्स ऐप मैसेज में और टंकण करते समय रोमन लिपि का प्रयोग करते हैं I देश में वाङ्मय के स्तर पर रोमन लिपि का प्रयोग करने वाले लोग बहुसंख्यक हैं I इसका कारण यह है कि ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं का विस्तार अंग्रेज़ी में सर्वाधिक हुआ है I पहले की तरह अब अंग्रेज़ी-विरोध के स्वर मंद पड़े हैं I प्रयोजनमूलकता, स्नातकोत्तर शिक्षा, साहित्येतर विषयों में विशेषज्ञता और साहित्येतर विषयों में शोध के स्तर पर अधिकांश भारतीय भाषाएँ पिछड़ी हुई हैं I सम्भवतः इसीलिए भूमंडलीकृत गाँव में भारत के हिंदीभाषी प्रदेशों में कॉन्वेंट स्कूलों के प्रति ललक गाँव-गाँव में दिखाई पड़ने लगी है I सम्भवतः हिंदीतर भाषाभाषी प्रदेशों में भी यही स्थिति हो सकती है I हिंदी भाषाभाषी प्रदेशों के कई कॉन्वेंट स्कूलों में अंग्रेज़ी न बोलने पर फ़ाइन लगाए जाने की बातें भी सुनने में आती हैं I यह अंग्रेज़ी के बढ़ते महत्व का सूचक है I भाषा और राष्ट्रीय अस्मिता, भाषा और अस्मिता के अंतः सम्बंधों को लेकर चिंतन पहले की अपेक्षा कम हुआ है I भारतीय भाषा

दिवस, अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस और हिंदी दिवस जैसे अवसरों पर किसी समवेत संकल्प और कार्यान्वयन का अभाव-सा दिखाई पड़ता है I राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषाओं को समुचित स्थान देने के प्रयत्न दिखाई पड़ते हैं -इसका व्यावहारिक अनुप्रयोग और अपेक्षित परिणाम प्रतीक्षित है I चूँकि अज्ञेय के चिंतन का एक पक्ष भाषा विमर्श है इसलिए बदले हुए समय में उपरोक्त प्रसंग उल्लेखनीय, विचारणीय एवं चिंतनीय हैं I वस्तुतः अज्ञेय का भाषा चिंतन पराधीन भारत के दिनों में पल्लवित -पुष्पित हुआ था ! उत्तर आधुनिकतावादी दौर में भाषा के प्रति सोच बदली है , स्थानीयता के प्रति सजगता बढ़ी है I विकास और प्रगति के अवसरों ने विरचनावादी सोच की ओर उन्मुख किया है I हालाँकि विरचनावादी दृष्टि की सीमाएँ भी स्पष्ट हो गयी हैं ! अज्ञेय जिस मैथिली के लिए सैनिक की भाषा में 'मोर्चे की और एक भाषा' शब्द का व्यवहार कर रहे हैं उसी के लिए वर्ष 2012 में मैथिली के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित शेफालिका वर्मा इन शब्दों का व्यवहार कर रही हैं -"माई हसबैंड एक्स्प्लेंड टू मी हाउ मैथिली नीड्स टू बी नरचर्ड ऐंड हाउ देयर आर वेरी फ़्यू राइटर देयर I दिस स्ट्रक मी I"(हिंदी बचाओ मंच के एक साल, सं. शची मिश्र, आनंद प्रकाशन, कोलकाता, प्रथम सं. 2018, पृष्ठ 534) इस प्रसंग में व्यक्ति, अभिव्यक्ति, भाषा, लेखन और समाज के संबंध स्मरणीय हैं I

'संस्कृति' स्तम्भ की शुरुआत 'वैष्णव संस्कृति के पूर्वी दिक्पाल' नामक लेख से होती है I यह मणिपुर केंद्रित है I मणिपुरी नृत्य के लिए प्रसिद्ध गुरु मैसनाम अमूबी सिंह का पोर्ट्रेट भी प्रस्तुत किया गया है I इस तरह दिनमान ने हेम बरुआ के शुभकामना संदेश को व्यवहार में परिणत कर दिखाया I 'दिनमान' में 'साहित्य विशेषांक', 'स्वाधीनता दिवस विशेषांक' जैसे विशेषांक भी प्रकाशित हुए I

दिनमान का सम्यक् मूल्यांकन जब किया जाएगा तो इस बात का अनुशीलन किया जाएगा कि इससे ठीक पहले किसी एक पत्रिका में इतने विषय शामिल किए गए या नहीं? या उस समय की कितनी पत्रिकाओं में ऐसे विषय शामिल किए गए? यह भी देखा जाएगा कि अज्ञेय के पश्चात दिनमान अपनी परम्परा को किस रूप में आगे ले जाता रहा? दिनमान जैसी पत्रिका की परम्परा आगे ले जायी जा सकी या नहीं? इस परम्परा का विकास हुआ या नहीं? प्रयाग शुक्ल ने समकालीन हिंदी पत्रकारिता पर विचार करते हुए दिनमान की परम्परा का विकास न किए जाने पर निराशा व्यक्त किया है- "अब तो साहित्य की दुनिया ख़ाली कविता, कहानी और उपन्यास की दुनिया नहीं है I उसके कुछ ज़्यादा बड़े आशय और संदर्भ है कि किसी भी समय में किसी भी भाषा के साहित्य को बड़े उच्चतर संदर्भों से जुड़ जाना चाहिए तभी आपकी भाषा सफल हो सकती है, तभी शायद लेखक कवि का कम से कम आज के जमाने में व्यक्तित्व किसी हद तक पूर्ण होता है I ये सारे काम-काज उन्होंने किए और हम देख ही रहे हैं कि बहुत सारे लोगों की निगाह उस तरफ़ गयी है, हालाँकि अभी मैं मानता हूँ पूरी तरह नहीं गयी है I हिंदी अभी भी इस मामले में काफ़ी विपन्न लगती है I...फ़िल्म जैसे लोकप्रिय माध्यम पर हिंदी में चार लोग नहीं हैं लिखने वाले जिससे पाठक को लगे कि अमुक स्तंभकार फ़िल्म पर लिखता है इस नाते ही मुझे वह अखबार या पत्रिका देखनी चाहिए I खेल और संगीत की दुनिया का यही हाल है I जिस पत्र से मैं अब जुड़ा हूँ उसके भी सम्पादक वात्स्यायन जी रह चुके हैं I एक जमाने में नवभारत टाइम्स में, मेरे एक मित्र हैं मुकेश शर्मा जो संगीत पर समीक्षा लिखते हैंI जब वे छुट्टी पर चले जाते हैं तो एक समस्या मेरे सामने आती है कि अब मैं किससे कहूँ I इतनी गतिविधियाँ हो रही हैं कौन लिखेगा I रिपोर्टिंग तो हो जाएगी उस पर समीक्षा और टिप्पणी कैसे आएगी I कला पर भी यही स्थिति है I जब कि दूसरी भाषाओं, विशेषतः मलयालम और बांग्ला में स्थिति कुछ बेहतर है

I वात्स्यायन जी ऐसे व्यक्तियों ने उतना भी न किया होता, जितना उन्होंने किया तो इन ज़रूरी सवालों पर हमारा ध्यान शायद बिल्कुल ही नहीं जाता I उससे जुड़ी चीज़ यह है जो वात्स्यायन ने किया, रघुवीर सहाय ने किया, दिनमान से और काफ़ी बढ़ाया I आज सोचकर हम लोगों को खुद भी अचम्भा होता है कि उस जमाने में हम लोगों ने कई तरह के कामकाज किए थे हम भी नहीं कर पा रहे हैं जैसा कर रहे थे I किशोरी अमोनकर को कितना लोग जानते हैं I किशोरी अमोनकर पर आज से बीस साल पहले एक आवरण कथा थी I ऋत्विक घटक, भुवनेश्वर, अलाउद्दीन खाँ, हिम्मत शाह, राम कुमार ये आवरण कथाएँ उस जमाने में निकलती थीं I तो जब हम पलट कर देखते हैं...जब हम चर्चा करते हैं...उन चीज़ों की याद आती है या किसी प्रसंग में दिलायी जाती है तो ये सब चीज़ें मन में घुमड़ने लगती हैं और मुझ जैसा व्यक्ति बेचैन होने लगता है और अकेला महसूस करता हूँ I कई दिग्गज लेखक कवि उस जमाने में सोचे होंगे कि यह भी होना चाहिए, यह भी हो सकना चाहिए, वह सब नहीं हो रहा है I बेचैनी भी समाज में कहीं दिखाई नहीं पड़ रही है I"[17] प्रयाग शुक्ल को कला समीक्षा के लिए प्रेरित करने में अज्ञेय की बड़ी भूमिका रही है I प्रयाग शुक्ल ने अपने एक संस्मरण में इसका उल्लेख किया है I रेणु पहले से ही लिखते चले आ रहे थे I दिनमान के सम्पादक के रूप में अज्ञेय ने उन्हें भी लिखने के लिए प्रेरित किया I इसका भी उल्लेख प्रयाग शुक्ल ने किया है I आज की हिंदी पत्रकारिता में कला समीक्षा, फ़ीचर आदि अनिवार्य अंग के रूप में हैं I प्रयाग शुक्ल का मानना है कि "इसकी शुरुआत के पीछे वात्स्यायन जैसे लोग हैं I"

प्रयाग शुक्ल ने अज्ञेय की पत्रकारिता दृष्टि के एक पक्ष की ओर ध्यान दिलाया है, वह उल्लेखनीय है I उनका कहना है कि "उनका बहुमुखी रचना -कर्म इस बात

का भी परिणाम था कि वह अपने लिए और भिन्न बोध वाली रचनाशीलता के लिए एक ऐसा वातावरण चाहते थे जो उन्हें मानों सामान्यतः मिल नहीं रहा था I 'प्रतीक' से लेकर 'दिनमान' तक की पत्रकारिता यही तो बताती है I"[18] प्रयाग शुक्ल ने अज्ञेय की पत्रकारिता के एक अन्य पहलू का भी उल्लेख किया हैI उनका मानना है कि "वात्स्यायन जी के बहुवचन को अंग्रेज़ी की दुनिया की बरक्स रखकर भी देखना ज़रूरी है I वह अंग्रेज़ी की दुनिया से और अन्य भारतीय भाषाओं की दुनिया से भी दूर तक परिचित थे I उन्हें यह भी लगा होगा कि हिंदी की मौलिक ज़रूरतों के कारण उसमें फिर कई क्षेत्रों में, मौलिक तरह से कई काम होने चाहिए I प्रतीक से लेकर दिनमान तक उन्होंने एक बदले हुए परिदृश्य में हिंदी की दुनिया के लिए ये काम ज़रूरी माने और किए I"[19] दिनमान में प्रकाशित विषयवस्तु की नवीनता हिंदी पत्रकारिता की विकास परम्परा का अभिन्न अंग बन गयी I यह हिंदी पत्रकारिता को अज्ञेय का प्रदेय है I

संदर्भ

1. **रमेशचंद्र शाह: पत्रकारिता के युग निर्माता: स. ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय', प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण प्रथम: 2010, पृष्ठ संख्या- 37**
2. **शिखर से सागर तक, पृष्ठ संख्या- 133**
3. **पत्रकारिता के युग निर्माता: स.ही.वात्स्यायन 'अज्ञेय', पृष्ठ संख्या- 38**
4. **शिखर से सागर तक, पृष्ठ संख्या- 136**
5. **सम्पादक विष्णु नागर/असद ज़ैदी: रघुवीर सहाय, पृष्ठ संख्या- 195**
6. **सम्पादक विद्यानिवास मिश्र: अज्ञेय, पृष्ठ संख्या- 26**
7. **वही, पृष्ठ संख्या- 104**

8. **अज्ञेय: हिंदी पत्रकारिता का 'दिनमान', पत्रकारों की नैतिकता से ही बचेगा समाज, स्रोत: इंटरनेट**
9. **रामविलास शर्मा: नयी कविता और अस्तित्त्ववाद, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पहला छात्र संस्करण: 1993, पृष्ठ संख्या- 12**
10. **सम्पादक विष्णु नागर/असद ज़ैदी: रघुवीर सहाय, पृष्ठ संख्या- 200**
11. **आलोक पांडेय द्वारा उद्धृत: अज्ञेय की पत्रकारिता, हिंदी समय, इंटरनेट**
12. **सम्पादक विद्यानिवास मिश्र: अज्ञेय, पृष्ठ संख्या- 22**
13. **वही, पृष्ठ संख्या- 22**
14. **वही, पृष्ठ संख्या- 23**
15. **आलोक पांडेय: अज्ञेय की पत्रकारिता, हिंदी समय, इंटरनेट**
16. **शिखर से सागर तक, पृष्ठ संख्या- 134**
17. **प्रयाग शुक्ल: अज्ञेय और तारसप्तक, प्रबंध सम्पादक उदय शंकर तिवारी, सम्पादक सत्यप्रकाश मिश्र, इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण -1995, पृष्ठ संख्या- 92**
18. **प्रयाग शुक्ल: बहुमुखी रचना-कर्म की परम्परा और अज्ञेय, पूर्वग्रह (पत्रिका), अंक 92-93, मई-जून-जुलाई-अगस्त,1989, भारत भवन, भोपाल, पृष्ठ संख्या- 45**
19. **उपरोक्त, पृष्ठ संख्या- 46**